प्रमोद वर्मा
की
कविताएँ

कल और आज के बीच

१७, एम० आई० जी०, बाघम्बरी आवास योजना
अल्लापुर, इलाहाबाद-२११००६ फोन ५२७७१

प्रमोद वर्मा

अपनी स्त्री कल्याणी

और

बेटी पाखी

के लिए

अनुक्रम

□

कल कहाँ थी यह दूब 11 38

हो जा शामिल 13
खैरियत का खत 15
एक और अकेला दिन 16
जवाब दो दीवारो 17
मौसम बहुत खराब चल रहा है पाखी 18
बच्चा झील 19
वापस सपने मे 20
साझे की इच्छा 21
पिंजडे मे बद पाखी 22
खेल खेल मे 24
खुद जाननी होगी 26
राक्षस से बचाओ 27
जानता है शायद चाँद 28
वापसी यात्रा 29
होने की थकान 30
मुक्त अनुभव करने का दबाव 32
लेकिन वह गाये जा रही थी 33
तुमने कहा था पापा 34
तयशुदा पहचान नही 35
तनहा उम्मीद 37

स्मृतियों का क्या 39 58

घुमते जा रहे है नाम 41
कोई कही नही लौटता 42
अपने शहर का ऐपन 43
सिर्फ सरयू मे 46
निहायत खामोशी से 48
निखिल दा 49
पानी कौन देगा तुम्हारे बाद 50
पीछे छूट गया है 52
कहानी सौपते बाबा 53
मुस्कराता भी है अंधेरा 55
स्मृतियो का क्या 56

रात मे अकेले 59 107

सनातन स्वीकार 61
ठीक विपरीत चलता 62
जादू के अक्षर 64
कभी लिख सकूगा क्या 65
रेवड मे नही 67
यह ठप्पा ही 69
बेमानी है चेतावनी 73
कहाँ थी यह दूब 75
पवित्र देह स्मरण की 77
शाति शब्दातीत 80
सोच के लोक मे होना 82
मेरा खत तुम्हारे नाम 84
कविता—1989 86
लौट आना शाम 87

हलका सा आलाप 89
हमी होते हैं भाषा के बाहर 91
यह सिद्ध नहीं होता 94
बस बिहान तक 96
प्रतीक्षा करो 98
जल की धार मेरी तरफ 99
फाल्गुन की यह त्रयोदशी 100
दिसम्बर की वह भोर 102
अपना घाट 103
घर की शर्तें 105
अपने अपने कमकाड 107

□

कल कहाँ थी यह दूब

हो जा शामिल

क्या होगा रे इतना छटपटाने से
तेरे नालबद्ध ससार मे तो
सिर्फ तेरी माँ का लेकिन
बाहर तो
तेरे पिता का भी अँधेरा है
निकलता तो है बेशक यहाँ सूरज बिला नागा
लेकिन
खास खास इलाको मे

जिस इलाके मे आ कर रहना है तुझे
वहाँ तो
नालबद्ध ससारो का अधेरा
इस कदर घना है कि
आकाश मे
किस जगह हो सकता है चाँद
बता पाना तक
मुश्किल है

जिस इलाके मे रहने आ रहा है तू वहाँ
एक वयोवृद्ध तालाब है

सूरज और चाँद जहाँ
नहाने उतरते हैं
वे तो अभी नही मगर

इस समदर मे मगन नहाता
एक प्यारा सा तारा जरूर फँस गया कल
हमारे जाल म

उसे टाँग दिया है हमने
अपने मुहल्ले के सबस मजबूत साल के पेड पर
उसकी टिमटिम रोशनी मे औरतें राँधती है
और सलफी पीते मद
बच्चो को
समदर मे जाल फैलाने की जुगत समझाते हैं

वजनी तो होता है बेशक
घुप्प अँधियारे का एहसास
लेकिन
अँधेरी हाँडी म पकती / कुछ कर गुजरने की
उत्तेजना का साग भी
नही हाता कुछ कम स्वादिष्ट
इसे चखते बच्चो के पगत मे
आ
तू भी हो जा शामिल

खैरियत का खत

नही सँभाल सकेंगे पैर
तितली भर भी अतिरिक्त भार
खुद का सभार ही इतना अधिक है कि केतकी
लरज गयी है दाहिनी ओर

बुरी तरह सहम गया है / महमह खुशबू से बिंधा / भौरा
कुछ नही कर सकता आस पास की हवा को
बूद बूद पीते रहने के सिवा

डाकिये ने थमा दिया है मौसम को
खैरियत का खत
जितना भी आना था गुजर चुका आ कर तूफान

काँप काप जाती है
टहनी के हलके से हिलने से केतकी
तडकने लगा है काच
टूटने लगी है नीद
हाथ पाँव फडकान लगा है
पराग

सूरज और चांद जहाँ
नहान उतरते है
वे तो अभी नही मगर

इस समदर मे मगन नहाता
एक प्यारा सा तारा जरूर फँस गया कल
हमार जाल मे

उस टाँग दिया है हमने
अपने मुहल्ले के सबसे मजबूत साल के पड पर
उसकी टिमटिम रोशनी म औरतें राधती है
और सलफी पीते मद
बच्चा को
ममदर म जाल फैलाने की जुगत समझाते हैं

वजनी तो होता है बेशक
घुप्प अधियारे का एहसास
लेकिन
अँधेरी हाँडी म पकती / कुछ कर गुजरने की
उत्तेजना का साग भी
नही होता कुछ कम स्वादिष्ट
इसे चखते बच्चो के पगत मे
आ
तू भी हो जा शामिल

खैरियत का खत

नही सँभाल सकेंगे पैर
तितली भर भी अतिरिक्त भार
खुद का सभार ही इतना अधिक है कि केतकी
लरज गयी है दाहिनी ओर

बुरी तरह सहम गया है / महमह खुशबू से बिंधा / भौंरा
कुछ नही कर सकता आस पास की हवा को
बूंद बूंद पीते रहने के सिवा

डाकिये ने थमा दिया है मौसम को
खैरियत का खत
जितना भी आना था गुजर चुका आ कर तूफान

काँप काँप जाती है
टहनी के हलके से हिलने से केतकी
तडकने लगा है काँच
टूटने लगी है नीद
हाथ पाँव फडकाने लगा है
पराग

एक और अकेला दिन

जब चाँदनी
बबूल के पेड मे अटक जाती है तो
सन्नाटा बिछ जाता है सडको पर
और हवा
मेरे दरवाजे दस्तक देने लगती है

चादर ओढकर मैं बाहर आ जाता हूँ
और सीढियो पर तुम्हे खडी देख
तनिक भी विस्मित नही होता
और चाँद को बबूल से उतार लाता हूँ
तुम्हारे लिए

तुम उसकी देह म
रातरानी की खुशबू मलने लगती हो
मेरा रचा शिशु गीत गुनगुनाती

इस तरह
बीत जाता है
एक और अकेला दिन

जवाब दो दीवारो

जवाब दो दीवारो
बद कमरे मे विकल फडफडाते पाखी को बताओ
किधर है रोशनदान
उसे चाहिए
सिर्फ उसी के हिस्से का
टुकडा भर आकाश
दो दाना भात
बूद भर जल
एक चम्मच हवा
और मुट्ठी भर प्रकाश

वह आहूत है
देवताओ ने भेजा है
मेरे निमत्रण पर उसे

दिशाओ
फूँकना शुरू करो अपने शख
आ रही है जिसके पैरो की आहट वह
एक भरी पूरी दुनिया है

मौसम बहुत खराब चल रहा है पाखी

मौसम
बहुत खराब चल रहा है पाखी
जिन झुरमुटो मे हल चला रहा है तू
साँपिन ने भी वहाँ
ढेरो अडे दे रखे हैं

बेशक थकने लगा हूँ लेकिन
घटा फावडा चला सकता हूँ अभी भी
अगले सावन तक
अपना आहाता
एकदम साफ सुथरा हो जायेगा बेटा

तब
एक झूला डाल दूगा
पेंगे भरते जोड देना अपनी माँ की धडकनो को
अनत से

बच्चा-झील

बच्चा झील
बेसुध नींद मे अचानक मुसकरा पडती है तो
उस पर झुका सागौन का पेड
कौतुक से भर उठता है ।

कौन खेलता है नींद की दुनिया मे
बच्चो के साथ ?

शिकाकाई के फूल पर मडराती तितली या
पूरे जगल की खुशबू अपने मे भर कर इठलाने वाली हवा ?
घर के मुडेरो पर बैठने वाले पखेरू
या पुतलियो मे सिमट आया आकाश ?
मुह मे घुलता माँ के दूध का स्वाद या
माली बाबा के बूढे कठ से प्रवाहित
चिर युवा लोकगीत ?

वापस सपनें मे

सो गया बच्चा । और
घर ।

सोया ससार ज्यादा सुदर होता है या
जागता ?

इतना महीन जाल
कि हवा तक फँस जाय
लेकिन
फिसल जाती है मछली
हर बार ।
झिलमिलाते हैं
बच्चे के दूधिया दाँत ।

झरोखा खोलकर
पल भर
झाक लेता है नीद के बाहर
है तो सब कुछ ठीक-ठाक
और वापस हो जाता है
सपने मे ।

साझे की इच्छा

धार के आघातो से
फटने लगी है काई की परत
आश्वस्त मुसकराने लगी है बच्ची

आओ
सुबह की इस मुसकराहट का स्वागत करें।

कोयला घर मे घुसते ही उदेनाथ ने
हाक लगायी
बिल्ली ने बच्चे जने हैं।

पत्नी ने विकल होकर कहा
मत छू उन्हे
और कटोरा भर दूध रख दे वहाँ चुपचाप।

अपने बच्चे के दूध मे
दूसरे बच्चो के साझे पर
मुहर लगाने की इच्छा का
आओ
हम स्वागत करें।

पिंजडे मे बंद पाखी

अपनी बच्ची को
बरामदे की धूप से बचाने के लिए
मैंने
शयनकक्ष के बाहर की तरफ खुलने वाले
दोनो
कपाट
बद कर दिये।
पाखी
ठीक पिंजडे म वद पाखी की तरह
फडफडाई।
सीखचो पर चोच मारती पाखी की विकलता
मानवीयता का दभ भरने वालो से
आकाश जितनी बडी होती है इसे
आँख के आगे घटते देखना
क्या इतिहास की एक बडी घटना नही है ?
अपनी हर साँस मे
इतिहास जीता और रचता और जीता है आदमी।
जुल्म का सीखचा
बहुत

बेरहम होता है।
पापी के आगे
मैंने
ढेर सारे डब्बे / पत्र / खिलौने / ढक्कन
बिखेर दिये।
थोड़ी देर में
वह बिल्कुल भूल गयी
कि दरवाजा खोलकर
बरामदा पार कर
उसे
रसोई घर में रांधती
माँ के पास जाना है।

खेल-खेल मे

किताबें भी शामिल हो गयी हैं अब
मेरी बच्ची की दुनिया म ।
शेल्फ स काई भी किताब निकाल लाती है और
मुझसे कहती है कविता है । पढो ।

सुबह से शुरू होन वाले अपने खेलो मे उस
शामिल क्यो नही होने देती उसकी माँ ?
कित्ती सुदर है नीली आग
माचिस दिखाओ कि भक् से फल जाती है
चारो तरफ / लेकिन
माँ है कि माचिस की डिबिया छीन लेती है निष्ठुरता से ।

'यह भाँजी बहुत गदी है पापाजी
दो रुपये दो
एक किलो अच्छी भाँजी लायेंगे बाजार से ।

सिक्का / तराजू / बाजार
कुछ भी बाहर नही है उसकी कविता के ।
आकेशिया के पेड पर चढ़े धामन को देख कर

खिसक पड़ी थी
'पापा! पकड़ो उस रस्सी को!'

साँप को रस्सी और दुनिया को हाट मान
यह तारों को क्यारी में बोती है।
हर किताब जैसे एक कविता है
हर खेल वैसे ही एक काम।

खुद जाननी होगी

बेटी की आँख
देर रात तक नही लगी

उसकी पुटर पुटर से मैं
एक बारगी चौंक पडा
'पापा ! बिना खाये
सो सकते हैं ?'

पता नही मैं उसे कितना समझा सका कि
ऐसा असभव नही कर सका है आदमी
कम से कम आज की तारीख तक
और आगे की बात उसे
खुद जाननी होगी ।

राक्षस से बचाओ

एक राक्षस
बच्चों के खिलौने खा जाता है
दूसरा किताबें।

मैंने
तुम्हारी डायरी
वार्डरोब में छिपा दी है पापा
मेरे खिलौनों को
राक्षस से बचाओ।

जानता है शायद चांद

जानता है शायद चांद
कि पृथ्वी के ढेर सारे बच्चे
उसे
कितना प्यार करते हैं।

नही जानते लेकिन यह
अपने बच्चो के
सपनो की क्यारी मे
बारूद के कारखाने रोपते
उनके पिता।

वापसी-यात्रा

आधी सदी की वापसी यात्रा है
अपने बच्चे के साथ
खेल में शामिल होना ।

अनमने पिता से पूछता है बच्चा
क्या हुआ पापा ?

कुछ नहीं बेटे
मेरी छुक छुक गाड़ी रुक गयी थी

फिक्र मत करो पापा
मैं चाबी भर देता हूँ
फिर चलने लगेगी । और वह
सचमुच चलने लगी ।

होने की थकान

निदिया रही है मेरी बेटी
लेकिन थकान
नींद को उसके भीतर धँसने नही दे रही ।

उसका रोम रोम पुकार रहा है
नीं
नींद
लेकिन फैलती जा रही है
रोम रोम मे
थकान ।

मैं
उसके नन्हे नन्हें
हाथ पर
दबाने लगता हूँ ।
मेरी उँगलियाँ
उसकी थकान को पिघलता महसूस करती हैं ।

बेटी सोने लगती है ।
मैं सोच मे डूब जाता हूँ ।

इतनी बडी दुनिया म
हम बस दो थे

और दोनों के साथ
मोटी मोटी दुनियादारी तक से अनभिज्ञता।

ऐसे में
एक चमकदार तारा सहसा टूट कर
हमारी अँजुरी में आ गिरा।
हम इतना डरा चौंके थे
कि अँजुरी से तू
गिर ही जाती बेटी।
तुमको हमने अपनी
धड़कनों में टाँक लिया

हमारी धड़कनों में तू
बड़ी हो चली है।
अमर भान होने लगा है।

लगता है
हमारी थकान भी व्याप रही है तुझे।
हम थकान को लेकर
हम
कतई शर्मिन्दा नहीं हैं बेटी।

यह
तेरे माँ पापा की
तेरे माँ पापा होने की लड़ाई लड़ने की
थकान है।
यह
होने की थकान है।
बर्फ
जमती है
और
पिघल जाती है
फिर जमने और फिर पिघलने के लिए।

मुक्त अनुभव करने का दबाव

वट भर जगह बना
बेसुध सोयी बच्ची के बगल में क आँख की कोर में
जैसे ही लेटता हूँ उसकी दाहिनी मेरी आँख
जतन से सँजोये मोती की चमक से
बेतरह चौंधिया जाती है।
तात दारुण यह अनुभव।
कहीं से बेहद अच्छा भी लगता है।
या है उसने अपनी माँ का
पूरे घर में दौड़ लगा तृप्ति भर स पकाया प्रेमान्न।

से उसके बचपन की दुनिया में
फिर पिता की बाँहों को झूला बना
फेर दिया।
मोती क्या उसके पिता की
उसकी आँख की कोर में अटका यह अंदेशे से यह वापसी दीर्घ
वापसी की खुशी में ढरका है? या इस की अंतिम जीत न हो!

मुक्ति।
अकेलापन यातना है बेटी जिस तरह
ना दारुण होता है कि
मुक्त अनुभव करने का दबाव उफ इतन कहीं अपहरण तो नहीं बन
हर साँस का हिसाब रखना पड़ता है कि पड़ रहा है जाने-अनजाने

मैं ही कर रहा हूँ प्रार्थना
मैंने ही झोंका है इस आग में तुझे और भी तेरे लिए।

लेकिन वह गाये जा रही थी

बच्ची गा रही थी

कोई नहीं सुन रहा था लेकिन वह
गाये जा रही थी
बया चिरई आ बया चिरई
गाय चराने माँ गयी
गाय चरा कर आयेगी
तुमको खीर खिलायेगी

बया चिरई की माँ एक दिन नहीं लौटी

बच्ची ने गाना छोड़ दिया
उसकी खामोशी भी
किसी ने नहीं सुनी

तुमने कहा था पापा

तुमने कहा था पापा
चाँद ला दोगे मेरे लिए ?

हाँ बेटी। देख। वो रहा।

वह तो बहुत दूर है पापा।

नहीं तो। वह क्या नहा रहा है तेरे ही हौज मे।

उसे ठड लग जायेगी पापा।
चलो
जल्दी से तौलिये म लपेट
माँ के पास सुला दें।

तयशुदा पहचान नहीं

नहीं नहीं
बिलकुल मत छुओ
मेगज़िन के रैक पर रखी उस टोकरी को
बेटी ने एक समूची दुनिया समेट रखी है उसमें
खाली डिब्बे हैं और
टूटा एक ट्रे
मजीरे की जोड़ी और घुंघरू
प्लास्टिक की चूड़ियाँ
गेंद और टूटी कलमें
गुड्डा उसका हाथी घोड़ा हिरन जिराफ ऊँट और शेर
गुड़िया और उसके अलग हो गये हाथ
नुचे हुए कपड़े तक

बैठक में बिछी चटाई पर
वह पूरी टोकरी उलट देती है
खेल शुरू होता है
शेर के शरीर पर हिरन का सिर
या हाथी के शरीर पर जिराफ की गर्दन

एक अद्भुत सृष्टि होती है वह
जहाँ किसी की कोई तयशुदा पहचान नहीं होती
यहाँ तक कि
नाम भी बदल जाता है

खेल खेल में इस समय करती
बच्चों की फिक्र फिक्र हँसी सहेज कर रखी है
इस टोकरी ने
बिलकुल मत छूओ उसे

तनहा उम्मीद

[illegible] नहीं जाओगे पापा ?

छुट्टी है आज गुड फ्राइडे की

यह गुड फ्राइडे क्या होता है ?

एक त्योहार है ईसाइयों का

ये ईसाई क्या होते हैं ? आदमी न ?

हाँ आगे बताओ

आज के दिन सूली चढ़े ईसा मसीह वापस हुए थे

ये ईसा मसीह कौन हैं ?

एक बहुत बड़े संत

संत मैं जानती हूँ लेकिन सूली नहीं जानती

वह लकड़ी का क्रॉस बना
उस पर टाँग दिया गया और

वदन पर जगह जगह
कीलें ठाव दी गयी

जरूर चोर वदमाशा ने किया होगा ऐसा बुरा काम

हाँ वहुत वडे चोर वदमाशो ने

ईसा ने उनका क्या विगाडा था ?

कुछ नही
उनका कसूर वस इतना था
कि अलग तर्ज पर भजन गाना चाहते थे

यह तो कोई कसूर नही है
और एकदम खामोश उसकी आँखें
जाने कहाँ और क्या देखने लगी

यही तो रोना है
सत्य का मम जिसकी मुट्ठी मे हो
उसे तो वच्चा और नादान माना जाता है
और शासन का दड चोर वदमाशो की मुट्ठी मे रहता है

भयकर तूफान मे फँस गयी है नाव यारो
सौंप दा
वच्चे के हाथ पतवार
वही है तनहा उम्मीद

स्मृतियो का क्या....

गुमते जा रहे हैं नाम

वारंट पर हस्ताक्षर होने हैं
                    हाल ही
कोफ्त की वजह है
बेमतलब का इंतज़ार

उमड़ती हर लहर
बिना भूले
लिख गयी है अपना नाम

डायरी के मुड़े तुड़े पन्नों को पलटने का
            वक्त कहाँ देती है ज़िन्दगी

लम्बी होती जा रही हैं नामों की परछाइयाँ
गुमते जा रहे हैं नाम
और उनसे जुड़ी स्मृतियाँ

कोई कहीं नहीं लौटता

यह सोच कर बहुत खुश था
कि अपने गाव जा रहा हू ।

जो हाथ आया उसे
उलट पुलट कर देखा
जैसे ही थोडा ठोका बजाया
नक्शे मे जो
हू ब हू मेरा गाँव लगता था
साँप बन कर फुफकारने लगा ।

ठीक वही साँप
जिससे डर कर मैं बरसो पहले
भागा था ताबडतोड और
सीधे इस अरण्य मे शरण ली थी

सचमुच
कोई कही नही लौटता
न भाग ही पाता है कही से ।

अपने शहर का ऐपन

जिस स्टेशन की टिकट कटायी थी
क्या यही है वह गाँव
यहाँ तो
कोई भी मुझे नहीं पहचानता
न लोग न ठौर

मेरी अपनी कोई सड़क नहीं है यहाँ
एक पेड़ तक नहीं है कि पल भर को खड़ा होकर
दम ले लूँ
कोई मोड़ ऐसा नहीं जो मेरा हो
सब के लिए मैं
एक अनाम गाहक एक अजनबी मुसाफिर हूँ

और तो और
इस गाँव की नदी में तैरती
मछलियाँ तक मुझे नहीं पहचानती

जिन्हें हर शाम बिलानागा
आटे की गोलियाँ खिलाता हूँ

क्या ये भी नहीं सोच सकतीं
यह चुटकी भर आटा जुगाड़ने
कितनी हाय हत्या करता होऊँगा मैं

अपनी रोटी
लहरों में बहाने के बदले अगर
मैं जाल फैलाता होता
तो यही मछलियाँ
मेरा जीवन वृत्तांत लिखती होतीं

आता है एक दौर चलते चलते ऐसा भी जब
सफर
मुसाफिर का नहीं गाड़ी का माना जाता है

एक अनाम आदमी
दूसरे अनाम आदमी से टिकट खरीद कर
यात्रा करेगा तो
अनाम शहर के अलावा
पहुँच भी कहाँ सकता है

खास परेशानी नहीं होगी भटक जाने से अगर
अपने शहर का ऐपन
पीठ पर अंकित हो

प्लेटफार्म पर खड़े करंज की
खास लगती छाया
कड़क चाय और मली तमाखू के साथ
मीठी पत्ती पान का
खास लगता स्वाद

किनारे पर गाते भिखारी की
खास लगती आवाज़
किरासिन लम्पों की
खास लगती रोशनी
अपना स्टेशन
एक दिन ज़रूर आयेगा दोस्त

सिर्फ सरयू मे

आदि कवि
तुम्हारी रामायण
मुझे हमेशा उदास क्यो करती है
तुम्हारे और ग्रीक त्रासदीकारो के मन
क्या एक ही मिट्टी पानी से बने थे
सीता के भूमिगत हो जाने के बाद
तुम्हारा राम
ठीक मेरी ही तरह आचरण करता
जान पडता है मुझे
जैसे मैं अपने घर में होकर
नही होता
अपने काम मे होकर
नही होता
यहाँ तक कि
अपनी दुनिया मे होकर भी
उसी तरह तुम्हारा राम भी
रुँधे कंठ से
एक लकीर सिर्फ एक लकीर
उचारता फिरता है
बाजार से गुजरा हूँ खरीददार नही हूँ

जिस बाजार को रखने के लिए
राम ने सीता को छोड़ा था
उस बाजार ने उसे आखिर
शो केस में सजा ही दिया

मैं शोकेस में सजने की यातना से
परिचित हूँ आदि कवि
और उम्मीद की लहरें
मुझे भी सिर्फ़
सरयू में उठती दिखाई देती है

निहायत खामोशी से

मैंने
बालू पर पडा एक पत्थर उठा लिया ।

जल ने उसके कोने तराश दिए थे ।
उसकी त्वचा
बेहद कोमल निकल आयी थी और नसें
झिलमिला रही थी ।

मैंने उसे नदी मे उछाल दिया
निहायत खामोशी से
वह ऐसे विलीन हो गया जसे
बाहर कभी आया ही नही था ।

लेकिन
मेरे हाथ जानते हैं उसका वजन
मेरी उँगलियाँ उसका स्पर्श
और मेरा मन उसका दुख ।

निखिल दा

वृक्ष की
सबसे ऊँची फुनगी पर बैठ
कोमल ऋषभ मे आसावरी छेडने वाला वह पछी
उड गया
बहुत दूर

पानी कौन देगा तुम्हारे बाद

जलसे के बाद मुझे याद है एक दिन / मैं
सीधे तुम्हारे घर आया था।
मेरे हाथ मे गुलदस्ता था जिसे / मैंने
सहज ही तुम्ह थमा दिया था / और
तुम्हारा चेहरा
फूलो लदी क्यारी बन गया था।

कई दिन बाद मुझे यह बताते हुए कि
उस गुलदस्ते की एक डठल जो तुमने
एक गमले मे यो ही खोस दी थी
अब पौधा बन गयी है / तुम / खुद
रक्तिम भोर मे बदल गयी थीं।

जहाँ तहाँ के डठल बीन कर तुम
गमलो म खोस देती थी।
न जाने कहाँ से प्राण शक्ति लाती थी तुम
कि सबके सब
पौधे और फूल बन जाते थे।

तुम तो कहती थी
एकमात्र स्वप्न है तुम्हारा
ढेर सारे बच्चे

अपने सपनो के हाट को
एकबारगी क्यो समेट लिया तब ?

अगर क्षण भर को रुक / कर यह सोच
लिया होता कि
पानी कौन देगा उन गमलो मे तुम्हारे बाद
जिनमे
तुमने
अपने को रोपा है

तुम्हारे चांद और तारे
नही होते निरवलब और आकाशहीन ।

पीछे छूट गया है

यात्रा शुरू की तो सूय
मेरे कधो पर था ।

वजन बढ गया तो उसे
टोकनी मे रख बोह लिया ।

मैंने एकाएक महसूस किया
खिसक कर सूय
मेरी पीठ पर आ गया है ।

मुड कर देखता हूँ
वाकई बहुत पीछे छूट गया है
मेरे गाँव का सिवाना
बेतरह लबे होते जा रहे हैं
नाटे दरख्तो के साये

हवा मे लहरा रही हैं अब
सिफ धुएँ की लकीरें ।

सुलग उठे हैं शायद चूल्हे ।
क्या सिक रही होगी
मेरे भी हिस्से की रोटियाँ ?

कहानी सौंपते बाबा

इस गाँव मे कभी एक ऊँचा टीला
हुआ करता था।
चरणो पर झुकते ही वह
मुझे उठा कर
अपने कधो पर बिठा लेता
और मैं
रेल की पाँत पर
चीटियो की कतार की घडघडाहट
देखा करता था।

वह कमसुखन बूढा
सुरूर मे आता तो
खाँसता हुआ
अपनी स्मृतियो के कालाज बनाता
जिन्हे मैं सुनता था साँस रोक कर।

आज भी उस जगह
जहाँ कभी वह बूढा टीला हुआ करता था

उस कोलाज का एकाध टुकडा पडा मिल जाता है
और मुझे टीले की कहानी सौंपते
अपने बाबा का चेहरा याद आ जाता है ।

उनकी घनी झबरीली गंगा-जमुनी मूछों मे
कैसी अजीब हरकत हुई थी ।
वह मुझे हँसते हुए रोते दिखे थे ।

मुस्कराता भी है अँधेरा

वक्त ही वक्त है
अँधेरे के पास
आदमी के पास लेकिन नहीं।

अँधेरा यार
थोडा-सा वक्त क्या
नही दे सकोगे मुझको उधार
लुढक गया है मेरी पीठ से सूय और
दौड कर उसको पकड सकू बस इतना ही वक्त।

अँधेरा मुस्कराया।

हाँ मैंने भी तभी जाना कि
मुस्कराता भी है अँधेरा।

टटोल रहा हूँ अँधेरे को
शायद हाथ लग जाय वह लुढका हुआ सूर्य।

स्मृतियो का क्या

बारह तेरह साल पहले
अपने हाथ से लगाय थे मैंने यहाँ कुछ पेड
उनमे काजू जामुन और बेर तो
मेरे सामने ही फलने लगे स

मेरा पुनज म हुआ और
पूवस्मृतिया सहित
मैं फिर से वापिस
उसी दश म
उसी राज्य के उसी नगर मे
और ठीक उसी जगह
गोकि ठीक उसी तरह नही
इस बार मेरे साथ
मेरी स्त्री और बच्ची भी थी

आज
फलो से लदे काजू के पेड को देखते हुए
मुझे
किसी आँधी मे टूट कर गिर गये
केजुराइना के पेड की याद आ रही है
जिसकी कब्र पर

मोगरे का पौधा
हमेशा झुका रहता है

बेर के पेड की शाखें
हमे भीगे मन से काटनी पडी
वह फलो से लद गया था
और बंदर
हमारी नीद हराम किये थे
तब भी हमारी
अपने पडोस से बातचीत नही थी

तब फारेस्ट नर्सरी
बन ही रही थी
आज तो वहाँ
खासा सुरम्य रोज गार्डन है
हमारी बेटी वहा
नूरजहाँ के अदाज मे टहलती है

दो बँगलो के सामने की जमीन
उसी तरह असमतल है
और आज भी बच्चे
उस असमतल जमीन के अपेक्षतया कम असमतल टुकडे पर
क्रिकेट खेलते हैं

सामने की टेकडी पर
हनुमान जी ने छलाँग लगा दी है
और उन्हे पकड कर एक पुजारी ने
मदिर मे कैद कर दिया है

हनुमान जी के कैदखाने मे
सात और कभी नौ वल्व जलते हैं
जिनमे से सबसे ऊपर वाला
निऑन बल्ब है

जैसे शनि की आँख
बाकी सब
मगल वगल

इस बार सिंदबाद सवार है
बूढे के कधे पर
लिखने पढने मे मदी
तभी शुरू हो गयी थी
आज उसका
दीवाला निकल गया है

कोई नही लौटता
उसी देश
उसी राज्य
उसी नगर
उसी जगह
सिफ
स्मृतियाँ लौटती हैं
और
स्मृतियों का क्या

रात में अकेले

सनातन स्वीकार

बीज
कोई एक जड नही फेंकता

सहस्रो स्नायुयो से जुडा रहता है
धरती से
पेड

किसी स्नायु के कट जाने से
बेशक
बेहद मर्मान्तक पीडा होती है
लेकिन
कुल्हाडी के साथ
अपने सनातन रिश्ते को
अस्वीकार भी कैसे कर सकता है पेड

ठीक विपरीत चलता

खुद कितना जानते हो अपने बारे मे
बोझा उठाये बिना बताओ तो
    कितना वज़न उठा सकते हो

अरे
तुम्हें तो बइन्तहा ताकत दी है तुम्हारी माँ ने

जिसकी माँ ने
समूचा आकाश उठा रखा है सिर पर
इतना सा दुख नही उठा सकेगा क्या

नही
बिलकुल नही काँपो थरथराओगे
इससे क्या कि मादा पखेरू
नदी के उस तट पर है

बीच म बह तो रहा है शांत जल और
उसको पखा डुलाती हवा

जल और हवा से

ऐसा रिश्ता जुड़ेगा
कभी सोचा था तुमने

औरत को कंधे पर डाल
ठौर खोजता आदमी
जहाँ भी बिलम जाता है
तीर्थ बन जाता है

अपने पिता के
ठीक विपरीत चलता
पता नही कैसे
उन्ही तक पहुँच गया हूँ मैं

मैं सचमुच नही जानता था पिता
इतना वजन उठा सकता हूँ

जादू के अक्षर

टार्च की रोशनी मे कविता पढती यह लडकी

लहरें उठ रही हैं इसके बालो से
भवें थोडा और झुक गयी हैं
आँखें
सपनो से धुली जान पडती हैं
नासापुट
ईषत् फडक रहे है
चेहरे की सारी लुनाई
होठो के कोरो मे ढरक पडी है
ठोढी कुछ और दर्पित दीखती है

बला की ताकत है इसके टार्च की रोशनी मे
जादू के अक्षर पढ लेती है
टार्च की रोशनी मे कविता पढती यह लडकी

कभी लिख सकूंगा क्या

द्रुपद मेरा बिस्तर बिछा रहा है।

चादर की एक एक सलवट
तन्मयता से चुन रहा है
अपने आसपास से बेखबर
जरा भी न चुभे उसके साहब को सूनी सेज
और निंदिया रानी फट से आ जाये उनके पास।

अब वह मच्छरदानी लगा रहा है।
कुछ ऐसे जमाना चाहता है उसे
कि पेड पर लटके बल्ब की गिरफ्त मे
सिर्फ एक करवट आये
और दूसरी करवट पर
गहरे चकत्तेदार गाउन पहन नीद
उसकी मालकिन की तरह।

लेकिन
दूसरी करवट लेट कर भी मैं
बल्ब की गिरफ्त के बाहर
नहीं आ पा रहा हूँ द्रुपद

और तुम्हें
घर के खिड़की दरवाज़े बन्द करते
फिर चाबियों का गुच्छा सिरहाने रख
अपनी खुरदुरी खाट पर पड़ते देख रहा हूँ।
जैसे ही करवट बदलते हो
नींद के हो जाते हो।

रात को
नहीं खोजता क्या अपनी स्त्री को
तुम्हारा मन ?

मेरे अनमनेपन को तो खटाक मे पढ़ लेते हो
अपना चेहरा लेकिन
क्यों अपठनीय रखते हो इतना ?

मेरे अनमनेपन की तो हर सलवट
तुमने चुन दी
तुम्हारे चेहरे को पढ़ कर कभी
लिख सकूँगा क्या ?

रेवड मे नही

पोथियो मे आग लगा कर
तुम
अलाव के इद गिद
उन्मत्त नाचा किए

तुमने देखा नही
नाचती हुई तुम्हारी छायाएँ
तुम्हारी ही मौत वन कर
कैसे आसपास मँडरा रही थी

पद्मासन मार बुद्ध की नाक पर
तुम लाख मुक्के चलाओ
उसका अभय हस्त
आश्वस्त ही करेगा

तुमने देख लिया न
पोथियाँ जलाने से
अक्षर नही मरते
न ढहाने से मदिर

भित्ति चित्रा को तो
उधेड़ सकते हो
लेकिन
भित्ति हीन चित्रा का
क्या करोगे

तुम क्या मुक्त कर सकते हो किसी को
अपनी आँखो पर बँधी पट्टी तो
खोल लो पहले

बंदूक से लस होकर
पढ़ाने आते हो
और मदरसा खाली देख
दीवारो पर मुसकराते
नीति वाक्यो का ही निशाना बनाने लगते हो।

रुक क्यो गये
गोलियाँ खत्म हो गयी क्या
फिर तुम
मदरसा कैसे चलाओगे
नन्हे नन्हे हाथ-पैर धारण कर
ये नीति वाक्य
जब जमात मे बदल जायेंगे
तो तुम उन्हे
कैसे हँकालाग

समझ होती तो तुम
रेवड मे नही
मैदान म बिछी
दूब म शामिल मिलते

यह ठप्पा ही

चीटियों की कतार को
विजय दर्प से कुचलता यह बच्चा तो हाय
मेरा ही है
क्या हो गया इस बीच उसे
कल तक तो
चीटियों को आटा खिलाता था वह

शायद
मेरा ही कोई पाप
पहाड़ से टकरा कर
मेरे बच्चे के मन में गूँज उठा है

लेकिन कौन सा पाप
मैंने तो
इस प्रतिज्ञा वाक्य के उच्चार से
कंधे पर झोला लटकाया था
कि चाहे भटक भटक कर मर जाऊँ
यात्रा तो साफ़-सुथरी करूँगा

ऐसा नहीं है

कि तरह तरह की शक्ल मे
      प्रलोभन नही मिले
रास्ते मे
महला के अलावा
मय चाबी के किले भी मिले थे
और हीरे मोतिया से लदे पेड भी
मगा ही नही
हिमालय तक मिला
नाचती परियो और
        पीते देवताओ ने
दावतें भी भेजी

अक्लमदी से काम लो और
मेरे द्वारा जारी सामाजिक सुरक्षा के
            गारटी काड पर
अँगूठा भर लगा दो
मैं तुम्हारी
सारी चिताएँ ओढ लूगा
पेड पर उलटा लटका चमगादड
        प्रसारण कर रहा था

मैंने कहा नही
अपने बाल-बच्चो से
बेहद लगाव है मुझे
और अपनी चि ताएँ
मैं किसी को नही दूगा

पैरो के नाखून टूट गये
बिवाइयो से
खून रिस रहा था
लेकिन,
मैंने अपनी यात्रा जारी रखी
और किसी तरह
चींटियों के शिविर तक जा पहुँचा

सैनिकों ने पकड़कर मुझे
अपनी रानी के सामने पेश किया

कौन हो तुम और
यहाँ क्यों आये हो

मैं भी एक चीटा हूँ रानी
चौमासे की रसद जोड़ने निकला हूँ
अकेले ?
लगता है भारत से आये हो
खैर
हो जाओ शामिल तुम भी हमारी सेना में
मत्री जी
कार्ड पर अँगूठा लगवा लीजिए

मैंने कहा नहीं
अपना अँगूठा
मैं किसी को नहीं दूँगा
अपने देश तक को नहीं दिया

मूरख
हम अँगूठा नहीं
सिर्फ उसका ठप्पा चाहते हैं
तेरे देश को लेकर करेंगे भी क्या
हमें तो सिर्फ
रसद चाहिए

अब समझ गया
यह ठप्पा ही मेरी मौत का कारण है
अपने ही परिवार के चौमासे की
चिंता करने वाली फ़ौज का
कुचला जाना ही ठीक है
भले ही उसमें

सैनिकों ने पकडकर मुझे
अपनी रानी के सामने पश किया

कौन हो तुम और
यहाँ क्यों आये हो

मैं भी एक चीटा हूँ रानी
चौमासे की रसद जोडने निकला हूँ
अकेले ?
लगता है भारत से आये हो
खैर
हो जाओ शामिल तुम भी हमारी सेना मे
मत्री जी
काड पर अँगूठा लगवा लीजिए

मैंने कहा   नही
अपना अँगूठा
मैं किसी को नही दूगा
अपने देश तक को नही दिया

मूरख
हम अँगूठा नही
सिफ उसका ठप्पा चाहते हैं
तेरे देश को लेकर करेंगे भी क्या
हम तो सिर्फ
रसद चाहिए

अब समय गया
यह ठप्पा ही मरी मौत का कारण है
अपने ही परिवार के चौमासे की
          चिंता करने वाली फ़ौज का
          कुचला जाना ही ठीक है
भले ही उसमे

बेमानी है चेतावनी

खुद मुझे ज्ञात नही जिस शब्द का अथ
उसकी मीमासा का अगर
गढ भी लू कोई पहाड
तेरे समुद्र मे कहाँ उतारूँगा उस

जल पर चल सकती है उसे
औरत
और मँझधार मे उतरा सकता है उसे
आदमी कहते है

जिसन डूबने को उतराना मान लिया है
बेमानी है तट पर ठुके
चेतावनी के सूचना पटल उनके लिए

दिशा दिशा स उठन लगा है
धुआ
पूरे का पूरा तालाब जल रहा है
भाग कर
कौन से पड पर चढेंगी मछलियाँ

बेमानी है चेतावनी

खुद मुझे ज्ञात नही जिस शब्द का अथ
उसकी मीमासा का अगर
गढ़ भी लू कोई पहाड
तेरे समुद्र म कहाँ उतारूँगा उस

जल पर चल सकती है उसे
औरत
और मँझधार मे उतरा सकता है उसे
आदमी कहते हैं

जिसने डूबने को उतराना मान लिया है
बेमानी है तट पर ठुके
चेतावनी के सूचना-पटल उनके लिए

दिशा दिशा म उठने लगा है
धुआ
पूरे का पूरा तालाब जल रहा है
भाग कर
कौन से पड़ पर चढ़ेंगी मछलियाँ

सारे के सारे तो
　　मशाल बन गये हैं

अपनी निरुपायता मे क़ैद हम
एक दूसरे को गुहारते हैं
तू मेरी आँख से देख मैं
तेरी टाँगो से चलूगा

नही जानता किस गाँव को जाना है
बस वहाँ नही रहेगे जहाँ
तालाब जलते हा और
मछलियो को
पेड तक नही दे सकते शरण

कहाँ थी यह दूब

उसका नाच
मोहक लगता है
क्योंकि अपने लिए नाचता है मोर

हर दिन
एक नया छद रचा जाता है
हर सुबह शाम
गडरिया
नयी कजरी या बिरहा गाता है

उसमे घुल जाता है आदमी
तो शब्द गीत बन जाता है
पता नही
किन घाटियो म बज रही है वशी
समुद्र की किन अतल गहराइया से
    उठ रहा है
    आलाप

हर दिन
नया ही पहाड चढता हूँ

अपनी
एक नयी ही मूरत गढता हूँ

अब
मचमुच रीत गया बादल का जल-कोश
आश्विन लग गया
याद है पिछले साल का कुआर

एकदम अलग और अनपहचाना सा लग रहा है न
आज का चांद
कल
कहाँ थी यह दूब
और सुबह की हवा मे हलकी सी कँपकँपी

आज
बिना डरे नहा रही है नदी
कुलबुलाने लगी हैं उसके
पेट मे मछलियाँ

नाली मे पडे भात के दाने बहा ले जाने
अब
नही आयेगा समुद्र
तू
निश्चित होकर गा सकती है बरवै रामायण गौरया

सब कुछ अद्वितीय होता है न
हर शाम का आकाश
रोओ की सिहरन
पसीने का स्वाद
और देह की गध

पवित्र देह स्मरण की

तुम्हारे नाम मे जादू है
कागद पर तरते ही
थरथरा जाता है पेड

कलम
शून्य मे डूबने से
      इनकार कर देती है

इतना कुछ
कौन लिख सकता है भला

मन अकुलाने लगता है
जरूर कुछ हो रहा है कही
वरना
क्यो चीख पडता इस तरह एकाएक
                    सन्नाटा

पूरब को खुलती मेरे कमरे की खिडकी
            अब बन्द नहीं रहती

दूर अमराई से
आ रही है / बौर की गंध

घड़ी पर मैंने
एक कलेंडर टाँग दिया है
उस पर
एक बच्चे की तस्वीर है
बच्चे का चेहरा
अपनी माँ से बहुत मिलता जुलता है

कितनी कितनी साँसत
लेकिन
कितना कितना सुख
जिस पत्थर पर पैर रखता हू
नाव बन जाता है।

पाल उठाकर
छोड दो नाव को हवा की मर्जी पर
जिस घाट भी लगे
बना लेंग झोपडा
अपने को चाहिए भी क्या
एक दूसरे के सिवा

किसने रख दिया मेरे दरवाजे
पलाश का यह गुच्छा

नया कुछ उग रहा है
मेरे भी अंतस मे

परेशानियो की शुरुआत
उनसे अंत लगन लगी है
जो पलाश धर गया है दरवाजे पर आज

एक दिन
सूने घर मे
    जरूर करेगा प्रवेश

और मैं
इतराने लगता हूँ
जब से यह फूल खिला है
कितनी सारी तितलियाँ उड़ने लगी है
    मेरे बगीचे मे

कितनी पवित्र देह होती है
    स्मरकीण

मन
पुण्य सलिल से धुल जाता है

शाति शब्दातीत

कमल तो
तालाब मे / स्नान करने स ही हाथ
लग सकता है ।

कमल की तरफ लपकता हूँ तो
एकदम थरथरा जाता है जल

जल
कितना गहरा
और शातिदायक है

शाति
शब्दातीत जादू है
इस जादू का प्रभाव
अनत काल तक
प्राणो मे बजता है

जमे ताल म

छप छप करती मछली
मछली पर डोलता कमल

कमल की तरफ लपकते हाथ
और ज्यादा थरथराता जल
जाल में फँसने से
इनकार करता अनुभव

सोच के लोक मे होना

भाषा
सवाद कायम करने के लिए मिली है मेरी जान
खतरनाक पहाडी नदी पर
मेहनत से बनाये
बेंत के पुल को तोडने के लिए नही

याद करो
स्पर्श के उस शब्दहीन सवाद को
जो बिजली सा लौक उठता था अदर
और अपने होने का समूचा अर्थ ही उजागर हो जाता था

तुम
नदी के जल सा सिहर पडती
और आसपास के अक्स सा
मैं काँप काँप जाता

पेड को मुसाफिर
और मुसाफिर को छाया मिल जाने के बाद
कौन सा टटा बखेडा तय करना रह गया है
चलो तुम्ही सोच कर बता दो

सोच के लोक मे होना
क्या भाव के लोक मे होना नही है
खतरनाक नदी पर
पुल बनाने का काम भी
प्रेम ही मे होना है मेरी जान
सिर्फ प्रेम करता आदमी
ईश्वर नही होता
श्रम मे भी वही होता है

तुम रोम रोम मे व्याप्त
अपने ईश्वर को नही पहचान सकी

शब्द के काँटे मे आँचल उलझा लोगी तो
शब्दातीत के फूल
कौन चुनेगा
मैं पुल बना रहा हूँ तो तुम
राहगीर बन जाओ

मैं काम कर रहा हूँ तो
धीमे धीमे गुनगुनाओ
इस गुनगुनाहट के बिना काम
प्रेम नही बन सकता मेरी जान
फिर आदमी
ईश्वर कैसे बनेगा

हमे जिन्दगी भर
काम करते गुनगुनाना है

भाषा
गीत के लोक को
सोच के लोक से जोडने को मिली है मेरी जान

मेरा खत तुम्हारे नाम

मुझसे दूर हो जाओगी तो
तुम्हे
रोज एक चिट्ठी लिखूगा

मरे घर के आहाते मे
एक बढा हुआ काजू का पेड है
इन दिना यह पेड
सहस्र भुज हो गया है
एक एक भुजा मे
कई कई हथेलियाँ हैं

एक चिडिया आकर
रोज इसकी फुनगी पर बठ जाती है
उसकी आँखें
डबडबायी होती है

इस चिडिया को पहचान लो
सुबह होने के पहले

हर दिन
यही मेरा खत तुम्हारे सिरहाने रखने जाया करेगी

जागती मिलो
तो इससे बात मत करना
वरना वह वापिस नही आ सकेगी
और मेरे घर का आहाता
एकदम सूना हो जायेगा
ले दे कर बस
यह आहाता ही तो है जिसे मै
सवथा अपना कह सकता हूँ

उसके सीमात पर बैठी चिडिया
मैं
तुझे
हर रोज एक खत लिखूगा

कविता—1989

एक गरम कोट
उसके लिए सिल ही दो पापा[1]

चलो
ऐसा कपडा जो हमे लगे उस पर फबेगा
खरीद लायें

नाप उसके शरीर का
मैं तुम्हे लिखा दूँगा

मैं लिखाऊँ
तुम बनाओ

और कोट देश को फिट न आये
ऐसा नही हो सकता पापा

---

1 कामरेड मुमताज भारती का घरू नाम

लौट आना शाम

मेरी शाम
आज फिर रास्ता भटक गयी

पता नही
किन एकातो से घिरी होगी
अपनी खेरिका से बिछुडी मेरी गाय

कहाँ ढूढे चरवाहा उसे

डूबने की सोच ही रहा था दिन
कि एकदम से उमड पडा अधकार
पक्षी घर कैसे लौटेंगे
दीया कौन बारेगा आज
कौन लेगा लेखा जोखा दिन भर की फिजूलियात का
थाली कौन परोसेगा
पखा कौन झलेगा
किसकी उँगली पकडकर
किन्नर लोक की यात्रा करूँगा आज

पवत
घाटियाँ
झुरमुट और नदी
नदी म नहाते दो बच्चे
उन बच्चो के ढेर सारे खेल
बगीचे भर फूल

फूला जितनी तितलियाँ
हवा जितनी गध
गध जितना आकाश
आकाश जितना मन
और मन जितना खेल का मैदान

दूर कही रभा रही है गाय
फूट रहे हैं मेरी वशी के रध्रो से
प्राण
कोई नही छीन सकता उस
जो मेरा है
चाहे कितना ही क्यो न हो समर्थ

जा रहा है मेरा हरकारा
तुम लौट आना शाम
पवत
घाटी
झुरमुट और नदी

मैं
खो गया हू मले म

हलका सा आलाप

ये इतना भी नही जानते
कि जिस गाँव मे रहते हैं वहाँ
एक पहाडी नदी वहती है
जिसकी गदन दबोचने को आतुर
चटटान के हाथ
उसकी कमर मे फँस कर रह जाते है

उसके तट पर झूमते
बास वनो को गाते कभी
सुन लिया होता तो
प्रतीक्षा-आकुला स्त्री के
जूडे का फूल नोचने की इच्छा
इनके मन मे नही जागती

कुररी के रोन पर गाय
विकल, रँभाती है
केलो को महानदी
इशारे से बुलाती है
इनकी

खटाक से त्योरियाँ चढ़ जाती हैं
ठडी हवा का यह झोका
गाँव म
किसकी इजाजत से आ गया

जिन पहाडियो स घिरा है यह गाँव
उनके तो चरण भी
इन्होने आज तक नही छुए
इन्हे नही पता
कि उनकी गुफाओ म
इस गाँव का चित्र इतिहास
विस्तार से अकित है
रात के पिछले पहर म आकर बूढे-पुरनिया जिसे
प्रेम से बाँचते हैं
फसला करें पहाड बाबा ही
अपने गाँव की नदी के
गीत के अतरे म
अपना हलका सा आलाप गूँथकर हमने
दड सहिता की किस धारा को तोडा है
पाखिया के साथ मदनोत्सव मे शामिल हो
कौन सा गुनाह किया है बतायें
गुफाओ म अकित
गुफा के चित्र इतिहास को बाँचते
मेरे पुरखे पुराने
बतायें तो एक बार

हमी होते है भाषा के बाहर

समूची तकलीफ याने
माँ की नाल से
अपने बच्चे की नाल तक यात्रा
बचपन की
वस्त्रहीन सोने की इच्छा से लेकर
अब तक ऐसा न कर पाने की बेवसी '

मर्जी माफिक खाना और
अपनी मनपसद किताब तक नही चुन पाना
मन माफिक दोस्त और समाज तो क्या
काम तक न मिलना
और रिक्शा खीचते उमर गुजार देना
मेरी यह अधूरी सधूरी जबान
कायम है अभी तक

यही क्या
कुछ कम अचरज की बात है

एक तकलीफ़ पूरी तरह् व्यापे इसके पहल
तरोताजा । दूसरी आ जाती है

पहली
तब
परदे की ओट हो लेती है

सातवें साल मे ही
देश निकाले की सजा पाये उस बचपन के दोस्त
राधू की बाँह थाम
परी लोक की खोज मे भटकना
दरअसल
मेरी बुनियादी तकलीफ है

बुनियादी तकलीफ
कभी नही मरती
वरना आज तारीख तक राधू
खेलने बुलाने
मेरे घर नहीं आता
न कविता मे बेसुध खो जाने पर
अध्यापक से पिटता हर रोज ही

बिना माँ के पौधे का
पेड मे बदलना
उसकी छाया-तले
पूरे परिवार की रसोई पकना
फल होते ही कीडे लग जाना
पेड का
झखाड होते चलना
कहाँ
कौन सी तकलीफ
सचमुच मर सकी है

इच दर इच पहाड की चोटी चढ़ने की तकलीफ
या अनाम देश मे
एकदम ही अकेला अनुभव करने की

आख का काजल बनते दीये के
बुझ जाने की

या टिमटिमाते जलते रहने की
पडोसी के भूखे बच्चे का कौर न बन पाने की
या अनाचार के नाटक मे
निष्क्रिय भूमिका अदा करते रहने की ही

आधी रात को
विकल उडते बगुलो का जोडा
तेज बहाव मे उतराता तिनका
और पँखुरी पँखुरी झरता फूल नही
हमी होते हैं भाषा के बाहर
या समूची तकलीफ के

समूचा हासिल हुए बिना
कुछ भी अपना नही बनता
देश घर औरत कविता कुछ भी नही

अपने को
समूचा नष्ट न कर पाने की तकलीफ
उफ़ !

यह सिद्ध नही होता

क्यों रूँधू अपने को बाडे मे
कौन ऐसा है जिसका गला
उसका समझौता नही घाटता

जो मेरी मुट्ठी मे है वह
लहर है
क्षितिज से उतरती पदचाप जिसे धर्रा रही है वह
शब्द

इस भ्रम मे बिलकुल मत रहना कि
हवा मे न लपट है न खुनक

इससे कुछ सिद्ध नही होता कि राजधानी की सडको पर
अम्न
टहल रहा है निश्चित

जिसे वरकाने की हजारहा कोशिश म मुब्तिला रहता है
आदमी
मुमकिन है उसका वह अतीत ही सुलग उठे
और कुछ न कुछ साला सूझ ही जाये इस घुप्प अधेरे म

अगर कही भवितव्य मेरी मुट्ठी मे आ जाये तो
मैं
उसे भी लहर ही रहने देना चाहूँगा
सुना है जिसमे मछलियाँ नही तैरती वह ताल
सड जाता है
मैं स्मृतियो मे जीवित हूँ
मुझसे
कोई मेरी उम्मीद नही छीन सकता

राजधानी की सडको पर
अम्न टहल रहा है इससे यह सिद्ध नही होता
कि पर्वता जगलो देहातो कस्बो की
डडी पगडडी डगमग डग रस्तो पर
नही सुलग रही है आग

वस विहान तक

पिछले साल सूखा पड़ने पर
तुझी को गुहारा था ईश्वर
आज बाढ़ आयी है तो तेरे सिवा
किसको पुकारें हम

यह सारी बिपदा
तूने हमारे ही करम म क्यो लिख दी
क्या जिस तरह हम
तुझे भी खरीद लिया अमीरो ने उसी तरह

जो मुसकान तेरे होठो पर हमेशा नाचती है
उकेरने वाला उसको
नोच कर फेंक भी सकता है नाली म
सिर्फ एक अतिरिक्त बूद
नदी की मर्यादा भग कर सकती है

हमारी कौम की कौम तबाह हो रही है
और तू सोचता है हम
अपनी तबाही के कारण को पूजते रहेगे

तू मृदग बजा रहा है हम
करमा नाच रहे है

यह तक बिसर जाता है ऐसे मे कि
तीन दिन से चूल्हा नही जला

मृदग बजाते तेरे हाथ
कभी तो थकेंगे
और बेहोश कर देने वाला जादू
टूटेगा एक दिन
तब
क्या होगा जानता तो है न
इसलिए बजा
और
और जोर से थाप लगा
जिसमे तेरी खैरियत है उसी मे मौत
और और जोर से थाप लगा
भूख
नाच मे बदलती जा रही है
मैं
तेरे समीपतर आता जा रहा हूँ
मुक्ति

पहले
दुकाल पडा
अब घर छप्पर और गाय गोरू बोहा गय
कुछ भी तो नही रह गया
सिवा इस नाच के

भूख का नाचा
बस बिहान तक चल सकता है

चूल्हा चेता कर
भात की हाँडी चढा द ईश्वर
थाली लगा दे
नहाकर आती ही होगी
भोर

प्रतीक्षा करो

प्रतीक्षा
अनन्त क्यो होती है
कथा का विस्फोट
एकदम अत म क्यो होता है

वाहन गुजरता है तो
पुल की धडकन तेज हो जाती है
सकुशल गुजर जाने दे इस दिशायात्री को ईश्वर
तब तक तो मुझे थामे रख

प्रतीक्षा करो
पक कर अपने आप फट जायगा फल और
उत्तर मिल जायेगा चिडिया को

ऊन के लच्छे सुलझाकर
पहले गोले तो बना छायायात्री
फिर सलाइया उठाकर घर डालना

जल की धार मेरी तरफ

आकाश से उतरकर शाम
आहाते मे टहलने लगी थी

अँजुरी बाँधे कतार से खडे
प्यासे पौधे
और बारी-बारी उन्हे पेट भर पानी पिलाती
तुम

इतने मे तुमने मुझे
एकाएक उत्तेजित आवाज दी

तन्वगी रजनीगधा की देह का एक हिस्सा
उभर कर झलमला रहा था

हलके से उसे मैंने छुआ कि तुम
एकदम आरक्त हो आयी
और जल की धार
मेरी तरफ मोड दी

फाल्गुन की यह त्रयोदशी

टूटकर फैल गयी लहर की
एकदम आखिरी ही सुबुकी
ऐन तल को छूता
            वक्ष का सिरा
सीटी बजाकर बुलाती
            चिड़िया
याद म दौडती'
      रेलगाडी की पाँत
एक खिलता हुआ कमल
आकाश म
अकारण फैले बादल और
सहमी-सहमी सी
फाल्गुन की यह त्रयोदशी

कौन स ठौर
पहुँच गयी जिन्दगी
काफी कुछ नया-नया और
अनपहचाना लग रहा है

कितना कितना जानना है अभी

अपने ही घर मे
अजनबी रहा चला आता है आदमी   ताउम्र

उदासी के इन्द्रधनुष का
एक रग है
खुशी
बागेश्वरी की तान
रातरानी की खुशबू
नेपथ्य का कुहराम

वाकई सफर हसीन लग रहा है

दिसम्बर की वह भोर

मैंने एक फूल की मिन्नत माँगी थी

आगन मे उग आया एक पेड
        रोम रोम मजरियो लदा।

मैंने चाहा था कठ भर जल।
उमड आयी शरद प्रसन्न नदी।
पेट मे कुलबुल करती मछली और
तट पर
ठाँव ठाँव तीर्थ।

वर्षान्त। ठिठुर गया था बाग। लेकिन।
दिसम्बर की वह भोर
रख गयी
गुच्छे भर गुलाब। चुपचाप।
मेरे द्वार।

अपना घाट

इतने आस पास हैं
ये
दो तारे
जसे
दो आँखें ।

क्या देख रहा है आकाश अपनी आँखो से ?

नीद म है
एक भरी पूरी नदी और
तट पर बैठा है एक आदमी
अपलक उसे निहारता ।

नीद मे कुछ अस्फुट बुदबुदाती है
नदी ।

उसका एकाध केश लहरा उठता है ।

आदमी
आहिस्ता

झुक कर
उसके केश सुलझा देता है।

नदी आँख खोल देती है।
आदमी
उसम उतर जाता है

आकाश की अकुलायी आँखें
अपना घाट ढूंढने लगती हैं।

घर की शर्तें

घर की शर्तें
तम्बू मे घर करने पर भी
पूरी ही तरह लागू होती हैं

एक नया रिश्ता
नयी नयी सज्ञाएँ
अपरिचित अँधेरी फिसलन भरी सीढियाँ
शिशु किलकारियाँ और मीठी मीठी लोरियाँ

अपने तम्बू के आसपास बाड़े रूँधने की बात
अपने सोच के बावजूद सोचने लगता है आदमी
तम्बू मे जब
एक माँ रहने लगती है

सौ दो सौ नये गीत और कई दजन कहानियाँ
हर रोज जनम लेती है

बच्चे को
हर पल एक नयी कविता चाहिए
हर मूड को बाधने वाली कहानी

हर पल जनम लेने वाली कविता और कहानी
की हिफाजत के लिए
बाडा रुँधने का काम भी
क्या क्राति का काम नही है

नही है तो कोई बात नही

क्राति की तुम्हारी धारणा
कौन जरूरी है सब की हो
मरी तो
मेरे जसी होगी
बाडा रूँधने के खिलाफ
मैं अब भी हूँ

एक दूसरे से मिले अलग-अलग पेडो का
जगल है
सब का है

अपने अपने तम्बू की चिता
जन चिन्ता है
कम से कम मुझको तो
लगता है।

अपने अपने कर्मकाड

पारंपरिक कमकाड करती
अपनी स्त्री पर
एक दिन
मैं हँस पडा था।

उसने गुस्से से पूछा
मेरी पूजा पर हँसने का
क्या हक है तुमको जब
मैं नही हँसती कभी
तुम्हारी पूजा पर ?

मुझे नही है विश्वास
कमकाडो पर
मैंने कहा तो तपाक से बोली
वह
क्यो रचते हो कमकाड तब
जला दो
अपनी
सारी कविताएँ।